दृष्टि
The Vision

# हिन्दी साहित्य

# HINDI LITERATURE

टेस्ट–X ( प्रश्नपत्र–1 )

DTVF/19(N-M)–HL-**HL10**

| निर्धारित समय: तीन घंटे<br>*Time allowed: Three Hours* | अधिकतम अंक: 250<br>*Maximum Marks: 250* |
|---|---|

नाम (Name): ANKIT MISHRA

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ______

ई-मेल पता (E-mail address): ______

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): Test no. 10 (2/06/2019)

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2019] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2019]: | | | | | | | |

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Ankit

## Question Paper Specific Instructions

***Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:***

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.*

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता ( कोड तथा हस्ताक्षर )
*Evaluator (Code & Signatures)*

पुनरीक्षणकर्त्ता ( कोड तथा हस्ताक्षर )
*Reviewer (Code & Signatures)*

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) हिंदी साहित्येतिहास-लेखन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की सीमाओं का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिंदी साहित्येतिहास लेखन की परंपरा में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का वही स्थान है जो कहानी व उपन्यास में प्रेमचंद का है। जिस प्रकार प्रेमचंद ने कहानी व उपन्यास लेखन को एक झटके में शैशवावस्था से प्रौढ़ावस्था में पहुँचाकर न सिर्फ इन विधाओं की "कर्मभूमि ही बदली ~~बल्कि~~ बल्कि कायाकल्प भी कर दिया" उसी प्रकार आ० शुक्ल ~~इतिहास लेखन~~ ने साहित्येतिहास लेखन की अनौपचारिक परंपरा को ~~से~~ निकालकर औपचारिक परंपरा में उस स्तर पर पहुँचा दिया जहाँ से बाद के साहित्येतिहासकार या तो उनके विरोध में लिखते नजर आते हैं या उनके समर्थन में।

आ० शुक्ल के लेखन का महत्व इस बात से भी अधिक बढ़ जाता है कि उनके लेखन काल में उतनी शोध सामग्री


Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

उपलब्ध नहीं थी जितनी कि बाद के लेखकों के पास था।

परंतु आ. शुक्ल का साहित्येतिहास लेखन कुछ संदर्भों में त्रुटिपूर्ण सा मालूम पड़ता है।

आ. शुक्ल ने 'प्रत्यक्षवादी' दृष्टिकोण के साथ लेखन किया जिससे वे परंपरा को अधिक महत्व नहीं दे सके हैं। वैज्ञानिकता का तत्व आ. शुक्ल में ज्यादा है और वो किसी चीजों का विश्लेषण अलग-2 हिस्सों के अनुसार करते हैं। इससे वस्तुनिष्ठता तो आती है, परंतु यह निरपद नहीं है। इस प्रकार के विश्लेषण की वजह से ही वो परंपरा को महत्व नहीं दे पाते और 'कबीर' के काव्य में 'अक्खड़पन' को उनकी नाथ परंपरा की परवरिश से नहीं जोड़ पाते, जैसा कि बाद में आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने किया।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

आ० शुक्ल मुक्तक काव्य की के प्रति पूर्वाग्रही से नजर आते है। वो प्रबंध-काव्य को मुक्तक की अपेक्षा श्रेष्ठ मानते हैं। इसी वजह से वो कबीर व सूर-दास को कम महत्व देते हैं तथा तुलसीदास व मलिक मोहम्मद जायसी को अधिक महत्व।

आ० शुक्ल सिद्ध व नाथ परंपरा के साहित्य को साहित्य नहीं मानते हैं। अर्थात वो यह मानते हैं कि इस काल से हिन्दी के बीज दिखने लगते हैं। यह बात कुछ विरोधाभासी सी प्रतीत होती है। यदि हिन्दी के लक्षण उस साहित्य में उपलब्ध हैं तो उसे हिन्दी का साहित्य क्यों न माना जाए?

गद्य व पद्य में आ० शुक्ल का झुकाव गद्य की तरफ अधिक है। वो गद्य को कवियों की कसौटी मानते हैं। तथा निबंध को गद्य की कसौटी तथा वैचारिक निबंधों को निबंध की कसौटी मानते हैं। यह बात कुछ ऐसी प्रतीत

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

होती है जैसे की वो अपनी रुचियों को साहित्य-लेखन के केंद्र में स्थापित कर रहे हों।

आ० शुक्ल 'छायावाद' के साथ वह न्याय नहीं कर सके हैं जिसकी कि वह अधिकारी था। छायावाद को उन्होंने नकारात्मक मूल्यांकन किया जिसका असर न सिर्फ छायावाद के विकास पर पड़ा, बल्कि निराला जैसे छायावादी कवियों के कवितमत जीवन पर भी पड़ा।

आ० शुक्ल समकालीन साहित्य से लगभग कटे-से रहे तथा उन्होंने प्रेमचंद जैसे उत्कृष्ट लेखक के बारे में भी कुछ विशेष नहीं लिखा।

आ० शुक्ल का काल वह काल था जब हिन्दी साहित्य के तमाम ग्रंथ जो कि बाद में प्राप्त हुए, वो उपलब्ध नहीं थे। इस वजह से भी कुछ कमियाँ रह जाती हैं, जिसके लिए लेखक को जिम्मेवार नहीं ठहराया जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

3. (क) प्रेमचन्द की कहानियों के रचना-शिल्प पर प्रकाश डालिये। 20



प्रेमचंद हिंदी कहानियों के युग पुरुष हैं। इन्होंने न सिर्फ हिंदी कहानियों की कथभूमि बदली, बल्कि उसका काया-कल्प भी कर दिया।

प्रेमचंद के काल में हिन्दी लेखन में भाषा के स्तर पर दो परंपराएं चल रहीं थी — एक फारसी युक्त हिन्दी तथा ~~दूसरी~~ दूसरी संस्कृतनिष्ठ तत्समी हिन्दी। प्रेमचंद नें इन दोनो अतिवादों से बचते हुए 'हिन्दुस्तानी' को अपने कहानियों कि भाषा बनाया है। 'रानी सारंधा' जैसी कुछ कहानियों में तत्समी भाषा का अनुपात ज्यादा है तथा 'ईदगाह' जैसी कहानियों में फारसीपन अधिक है। परंतु यह कथानक अनुपात में की मांग के अनुरूप है तथा सामान्यतौर पर प्रेमचंद के कहानियों की भाषा हिंदुस्तानी ही है।

प्रेमचंद की कहानियाँ 'वर्ग-चरित्र' को उद्‌घाटित करती हैं न कि 'व्यक्तिचरित्र' को। उनके कहानियों


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के नामक परंपरागत अर्थों वाले नामक नहीं होते।

प्रेमचंद की कहानियों में आदर्श और यथार्थ का अनुपात लेखन-काल के अनुसार बदलता रहा है। उनकी शुरुआती कहानियाँ आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद वाली हैं, जैसे - 'बड़े घर की बेटी'; बाद की कहानियाँ मुख्यतः यथार्थवाद, जैसे 'पूस की रात' 'कफन' जैसी कहानियों में तो यथार्थ अपने पूरे नंगेपन के साथ उपस्थित है।

कहानियों में लगभग हर वर्ग के मनोविज्ञान को समेटने में प्रेमचंद सफल रहे हैं। जैसे
बालमनोविज्ञान → ईदगाह
वृद्ध मनोविज्ञान → बूढ़ी काकी
किसान का मनोविज्ञान → पूस की रात

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कहानियों में अलग-2 अनुपात में अलग-2 संवाद शैलियों का प्रयोग हुआ है परंतु संवाद की दृष्टि से प्रेमचंद का उत्कृष्ट रूप 'गिला' कहानी में उपस्थित है जहाँ संवाद किसी अन्य से न होकर स्वयं से है, अपने ही मन में एक-बाद-एक उठने वाले विचारों से है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

## Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा में अंतर

संतकाव्य धारा मुख्यतः दो वर्गों में विभक्त की जाती है — सगुण काव्य धारा तथा निर्गुण काव्यधारा। सगुण काव्यधारा पुनः दो भागों में विभक्त की जा सकती है — कृष्ण भक्ति काव्यधारा तथा राम भक्ति काव्य धारा।

निर्गुण काव्यधारा वह है जिसका ईश्वर गुण रहित या गुणातीत है। यह मुख्यतः शंकराचार्य के अद्वैतवाद के सिद्धांतों पर आधारित है। इसके प्रतिनिधि मुख्य कवियों में कबीर, नानक आदि हैं।

सगुण काव्यधारा का ईश्वर गुण रहित है तथा यह मुख्यतः रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैतवाद के सिद्धांत पर आधारित है। इसमें कृष्णभक्ति के प्रमुख कवि सूरदास आदि हैं तथा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

राम भक्ति के प्रमुख कवि तुलसीदास आदि हैं।

सूफी काव्यधारा मूलतः उस सिद्धांत पर आधारित है जहाँ बंदा खुदा से मिलकर एक हो जाना चाहता है। यह मूलतः इश्क मजाजी से इश्क हकीकी की यात्रा है। इस काव्यधारा में मलिक मुहम्मद जायसी का नाम अग्रणी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी का प्रगतिवादी उपन्यास

हिन्दी का प्रगतिवादी अन्मास मूलतः मार्क्सवाद का साहित्यिक स्वरूप है। 1935-36 में 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना के साथ ही इसे एक सुनियोजित दिशा मिली।

प्रगतिवादी अन्मास शिल्प को अधिक महत्व नहीं देता है बल्कि संवेदना को अधिक महत्व देता है।

इसके अनुसार साहित्य आनंद की वस्तु न होकर क्रांति चेतना जाग्रत करने का एक माध्यम मात्र है। साहित्य तथा साहित्यकार की कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है बल्कि इनकी उपादेयता समाज-सापेक्ष है।

हिन्दी में प्रगतिवादी उपन्यासों की समृद्ध परंपरा रही है तथा 'यशपाल' व 'नागार्जुन' जैसे रचनाकारों ने इसे आगे बढ़ाया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) आंचलिक कहानी का परिचय

हिन्दी साहित्य में आंचलिक कहानी की ठोस परंपरा के शुरुआत का श्रेय 'फणीश्वर नाथ रेणु' को 'मैला आँचल' (1954) को प्राप्त है। मैला आँचल से पूर्व भी हिन्दी में कुछ उपन्यास ऐसे थे जिनमें आंचलिकता के तत्व कुछ-कुछ अनुपात में मौजूद थे, परंतु आँचलिकता का तत्व इतना ज्यादा हो कि अँचल ही नायक बनकर उभरे, ऐसा 'मैला आँचल' से ही संभव हो सका।

कुछ आलोचक आँचलिक उपन्यासों को हिन्दी की अपनी उपज मानते हैं तो कुछ इसका श्रेय रमारिया एजवर्थ, जैसे पश्चिमी लेखकों को देते हैं।

इन विधाओं में मूल प्रयत्न अँचल का ही वर्णन करने का होता है- बिल्कुल उसी रूप में जैसा कि वह है। भाषा में भी आंचलिकता होती है-


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इसी वजह से यह हर किसी के लिए सुग्राह्य नहीं हो पाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

7. (क) 'छायावाद पलायन का काव्य है।' इस मत पर विचार कीजिये। 20

'छायावादी काव्य' हिन्दी काव्य परंपरा के सबसे अधिक विवादित विषयों में से एक रहा है। इस विवाद कि वजह है छायावाद के काव्य में छिपी व्याख्या की अलग-2 संभावनाएँ।

इसी क्रम में कुछ समीक्षकों नें छायावाद को पलायन का काव्य कहा है। छायावाद के चारो प्रमुख कवियों — जयशंकर प्रसाद, निराला, सुमित्रानंदन 'पंत', तथा महादेवी वर्मा के काव्य में कई जगहों पर ऐसा प्रतीत भी होता है—

उदाहरण स्वरूप —

→ "ले चल मुझे भुलावा देकर मेरे नाविक धीरे-धीरे" (प्रसाद)

→ "दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही" (निराला)

→ "मिलन का मत नाम लो मैं विरह ~~कि~~ में चिर हूँ" (महादेवी वर्मा)


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पूर्वलिखित पंक्तियों से अनायास ही कोई भी यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि ये कवि मूलतः पलायनवादी हैं।

परंतु यदि इनके रचनाकर्म का सूक्ष्मता से विश्लेषण किया जाए तो स्थिति बिल्कुल विपरीत नजर आती है।

वस्तुतः कोई भी कविता कवि के मनोभाव का ही शब्दों में वर्णन होती है। कवि की मनोदशा बदलती रहती है, वह कभी निराश भी हो सकता है तो कभी आशावान भी।

~~अब वह~~ इन छायावादी कवियों के संपूर्ण साहित्य और संपूर्ण व्यक्तिगत जीवन का विश्लेषण करें तो यह पता चलता है कि यह बेहद जुझारू और कठिन व्यक्तित्व के लोग हैं और इनका काव्य भी जुझारूपन से ओत-प्रोत है।

निराला, अपनी पत्नी सरोज

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की मृत्यु के बाद भी अदि निराशा भाव के साथ 'सरोज-स्मृति' लिखते हैं तो कुछ ही समय पश्चात 'राम की शक्ति पूजा' जैसी कविता लिखते हैं जिसे डॉ निर्मला [redacted] जैन ने 'शक्ति काव्य का प्रतिमान' कहा है।
निराला 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी कविता से यह भी साबित करते हैं कि वे समाज के प्रति कितने संवेदनशील हैं। निराला लोगों में आत्मविश्वास का संचार भी करते हैं और उन्हें प्रयत्न करने के लिए प्रेरित भी करते हैं —

"तोड़ो-तोड़ो-तोड़ो कारा
फिर निकले गंगा जल-धारा।"

इसी प्रकार प्रसाद भी एक पलायनवादी न होकर एक जीवंत स्वं जुझारू रचनाकार हैं।

ब्रिटिश सत्ता के अधीन ~~नैराश्य~~ नैराश्य के गर्त में डूबते देशवासियों


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हैं वें स्वाभिमान का संचार करते हैं।

"हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।"

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि 'छायावादी काव्य' और छायावादी कवियों पर ~~समाज~~ ~~का~~ पलायनवादी होने का आरोप उचित नहीं है।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दिनकर की काव्यकृति 'रश्मिरथी' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'रश्मिरथी' दिनकर का एक प्रमुख प्रबंध काव्य है जोकि महाभारत की कथा को आधार बनाकर 'कर्ण' के चरित्र के ईर्द-गिर्द घूमता है।

मिथकिय तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को आधार बनाकर आधुनिक समस्यों का प्रश्न खोजने का प्रयत्न तथा पात्रों की नई संदर्भों में व्याख्या में दिनकर की योग्यता 'दिनकर' के ही समान है।

'कुरुक्षेत्र' के माध्यम से युद्ध की समस्या, साकेत तथा यशोधरा के माध्यम से क्रमशः माण्डवी तथा यशोधरा जैसी पात्रों ~~कर्मिको~~ की ~~पुनर्व्याख्या~~ पुनर्व्याख्या तथा रश्मिरथी के माध्यम से कर्ण तथा कुंती की पुनर्व्याख्या दिनकर नें की है।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space

रश्मिरथी का कर्ण a एक वीर योद्धा, दानवीर, उत्तम मित्र तथा शुद्ध हृदय का व्यक्ति है। समस्त योग्यताओं से युक्त होकर भी वह उस सम्मान से वंचित है जिसका कि वह उचित हकदार है। उसका संपूर्ण जीवन सिर्फ उस सम्मान-प्राप्ति की उत्कंठा से चालित होता है।

रश्मिरथी की कुंती मातृ-वत्सल, सहृदय और विवश नारी है। समाज का दबाव कुंती को ~~चाहकर भी~~ वह नहीं करने देता जो वह चाहती है। वह कर्ण को अपने पुत्र के रूप में खुलकर स्वीकार नहीं कर पाती है।

कर्ण और कुंती का द्वंद्व ही रश्मिरथी का केंद्र है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हिंदी रंगमंच की विकास-यात्रा में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की स्थापना 1953-54 में हुई। अपने स्थापना वर्ष से ही यह संस्थान हिंदी नाटक तथा रंगमंच के विकास को लेकर कृत संकल्प है। हबीब तनवीर जैसे योग्य लोगों के मार्गदर्शन में इस संस्थान ने हिंदी रंगमंच के विकास के लिए काम किया है।

नाटकों को लोकप्रिय बनाना, जयशंकर प्रसाद के कठिन नाटकों का मंचन, नुक्कड़ नाटकों का प्रचार आदि ऐसे अनेक कार्य राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने किए जो हिंदी रंगमंच के विकास में अत्यंत सहायक साबित हुए।


Copyright – Drishti The Vision Foundation